B.A. I Hindi Hons.

'उपन्यास का स्वरूप' का शेष
डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक

जैसा कि इसके पूर्व में देखा गया कि एक सफल उपन्यास के लिए भाषा की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है। भाषा किसी भी उपन्यास की श्रेष्ठता के लिए महत्वपूर्ण पीठिका का निर्वहन करती है। भाषा के साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि उपन्यास की प्रस्तुति किस प्रकार से की गयी है। उपन्यास के प्रस्तुति विधान को ही शैली कहा जाता है। हिन्दी में अनेक रचनाशैलियों का प्रयोग होता है। जैसे

(i) कथा शैली — यह उपन्यास की लोकप्रिय शैली है। इसमें कथाकार तटस्थ भाव से घटना, पात्र तथा संवादों का वर्णन करता चलता है। इसे किस्सागो शैली भी कहा जाता है। हिन्दी के अनेक श्रेष्ठ उपन्यास इसी शैली में लिखे गये हैं। प्रेमचन्द का रंगभूमि, कर्मभूमि, गोदान, गबन, यशपाल की दिव्या, मनुष्य के रूप इत्यादि। इस शैली में कथा अन्य पुरुष शैली में चलती है।

(ii) आत्मकथात्मक शैली — जब उपन्यास की कथा प्रथम या उत्तम पुरुष शैली में प्रस्तुत की जाए तो उसे आत्मकथात्मक शैली कहा जाता है। इसमें ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह कथा उस व्यक्ति या लेखक के जीवन की कथा है और समस्त घटनाओं का भोक्ता लेखक ही है जो सीधे अपनी बात पाठकों तक पहुँचा रहा है यद्यपि यह भ्रान्ति ही होती है। इस शैली में लेखक अपनी आत्मकथा नहीं कहता वरन् वह तो सामान्य सी कथाओं का वर्णन करता होता है। हिन्दी में इस प्रकार के उपन्यासों की संख्या कथात्मक

शैली के उपन्यासों से कम हैं। इस श्रेणी में हजारी प्रसाद द्विवेदी के - बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, इलाचन्द्र जोशी का घृणामयी, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय की शेखर एक जीवनी प्रभृति उपन्यासों को रखा जा सकता है।

(iii) पत्रशैली - इस शैली में औपन्यासिक कथानक पत्राचार के द्वारा निर्मित होता है। स्थूल रूप से ऐसा प्रतीत होता है कि यह उपन्यास नहीं वरन् पत्राचारों का संकलन मात्र है। ऐसे उपन्यासों की संख्या हिन्दी में बहुत ही कम हैं फिर भी पंडित बेचन शर्मा उग्र का 'चन्द हसीनों के खतूत' इस शैली का श्रेष्ठ उपन्यास है।

(iv) डायरी शैली - डायरी शैली में औपन्यासिक वृत्त डायरी के पृष्ठों के रूप में चलता है। इन पृष्ठों पर दिनांक तथा स्थान का भी अंकन किया जाता है ताकि डायरी शैली की विश्वसनीयता को बल मिले। किन्तु सच्चाई तो यह है कि यह एक शैली मात्र है प्रस्तुती कौशल मात्र है। इसमें डायरी के पृष्ठों से कोई - लेना-देना नहीं होता। 'शोणित तर्पण' उपन्यास इस श्रेणी का प्रतिनिधि उपन्यास है।

उद्देश्य :- जैसे विश्व के समस्त कार्यों के पीछे कोई - न कोई उद्देश्य होता है वैसे ही उपन्यास के मूल में भी कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। बिना किसी उद्देश्य के उपन्यास की कल्पना नहीं की जा सकती। किसी उपन्यास का उद्देश्य सामाजिक विकृतियों पर प्रकाश डालना होता है

किसी रचना में किसी के चरित्र के आदर्श को अभिव्यक्त करना होता है। यह उपन्यास का अन्तिम तत्व है किन्तु यही वह तत्व है जो सम्पूर्ण कथानक में ध्वनित होता सा प्रतीत होता है। विद्वानों का मत है कि उद्देश्य प्रतिपादन के क्रम में उपन्यासकार को बहुत सचेत रहने की आवश्यकता है। उद्देश्य का प्रतिपादन ऐसे किया जाना चाहिए कि पाठक को वह आरोपित सा न लगे। यह कथानक के अन्त होने पर ध्वनित हो उठे ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए। बहुत बार उपन्यास में उपदेश के रूप में उद्देश्य सामने आते हैं जो कदापि श्रेष्ठ नहीं माने जाते। उद्देश्य का प्रस्फुटन संवाद, घटनाओं तथा चरित्र-चित्रण के द्वारा होना चाहिए। तात्पर्य यह कि उद्देश्य परोक्ष रूप से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।

इस प्रकार उपन्यास के उपर्युक्त छः तत्व होते हैं। इनमें से एक के भी अभाव में उपन्यास का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। इनका सम्यक विनियोग औपन्यासिक सफलता के लिए अनिवार्य है।